परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।।२०।।

परः=श्रेष्ठ है; **तस्मात्**=उस; **तु**=परन्तु; **भावः**=प्रकृति; **अन्यः**=भिन्न; **अव्यक्तः**=अव्यक्त; **अव्यक्तात्**=अव्यक्त से; **सनातनः**=नित्य; **यः**=जो; **सः**=वह; **सर्वेषु**=सब; **भूतेषु**=भूतों की; **नश्यत्सु**=प्रलय होने पर भी; **न विनश्यति**=नष्ट नहीं होती।

अनुवाद

इस व्यक्त-अव्यक्त होने वाली जड़ प्रकृति से परे एक अन्य सनातन प्रकृति भी है, जो परा और अविनाशी है। इस संसार के नष्ट हो जाने पर भी उसका नाश नहीं होता।।२०।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण की परा (अन्तरंगा) शक्ति दिव्य और नित्य है। ब्रह्मा के रात्रि-दिवस में क्रमशः व्यक्त और अव्यक्त होने वाली अपरा प्रकृति के संपूर्ण विकारों से वह अति परे है। श्रीकृष्ण की यह परा अंतरंगा शक्ति गुणों में अपरा प्रकृति के ठीक विपरीत है। सातवें अध्याय में इन परा-अपरा शक्तियों का विशद विवेचन है।

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।२१।।

अव्यक्तः=अप्रकट; **अक्षरः**=अविनाशी; **इति**=इस प्रकार (जो); **उक्तः**=कहा गया है; **तम्**=उसे; **आहुः**=कहते हैं; **परमाम्**=परम; **गतिम्**=गति; **यम्**=जिसे; **प्राप्य**=प्राप्त हुए; **न निवर्तन्ते**=संसार में फिर नहीं आते; **तत्**=वह; **धाम**=धाम है; **परमम्**=परम; **मम**=मेरा।

अनुवाद

वह परमधाम अव्यक्त अक्षर कहलाता है और वही परम गति है। जहाँ जाने वाला संसार में फिर नहीं आता, वही मेरा परमधाम है।।२१।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण के परमधाम को 'ब्रह्मसंहिता' में **चिन्तामणिधाम** कहा गया है, जहाँ सब कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। गोलोकवृन्दावन नामक श्रीकृष्ण का परमधाम चिन्तामणि से रचित प्रासादों से परिपूर्ण है। वहाँ के वृक्ष कल्पतरु हैं, जो इच्छा करने मात्र से कोई भी पदार्थ दे सकते हैं; वहाँ की 'सुरभि' गाएँ अपरिमित मात्रा में दुग्धामृत प्रदान करती हैं। इस धाम में प्रभु सहस्रों लक्ष्मियों द्वारा सेवित हैं। वे सब कारणों के कारण आदिपुरुष 'गोविन्द' नाम से जाने जाते हैं। श्रीकृष्ण विदग्ध वेणुवादन-निरत हैं **(वेणुं क्वणन्तम्)**। उनका दिव्य श्रीविग्रह त्रिभुवन में परमाकर्षक है—नयन कमलदल के तुल्य हैं और विग्रह का वर्ण है नवोदित घनश्याम। उनकी सुरम्यांगता कोटि-कोटि कन्दर्प-दर्प-दलन है। वे शरीर पर पीताम्बर, कण्ठ में वैजयन्ती माला एवं केशराशि में मोरमुकुट धारण किए हुए हैं। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने